

जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



जैन जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruiti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ✆ : ०२० - २४२९५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● चातुर्मास प्रेरणा देता, आओ करले आत्म विकास	१५	● नफरत Vs प्यार ६५
● भारतीय जैन संघटनांचे २८ जिल्ह्यात गाळ काढण्याचे काम	१७	● ऐसी हुई जब कुरु कृपा : गूँजा जिनवाणी ने ६७
● जैन धर्माची पुरातनता आणि आजचे महत्त्व	१९	● पूना हॉस्पिटल, पुणे ६९
● कव्हर तपशील	२४	● आचार्य शिवमुनिजी म.सा. - प्रेस रलीज ७०
● जैन धर्माच्या साहित्यभूषण - सुरेखा शहा	३१	● रंगबिरंगी : रंग गरीबी के ७१
● प्री वेडिंग शुट महिलांसाठी घातक	३४	● परिस्पर्शी माणसं ७२
● कडवे प्रवचन	३४	● आचार्य शिवमुनिजी व आचार्य महाश्रमण - मंगल मिलन ७४
● बच्चों को संस्कारित करने में समय दे	३५	● कडवे प्रवचन ७५
● सुविचार	३७	● जितो पुणे चॅप्टर - जितो नगर ७६
● सुक्ति से मुक्ति : नीति	३९	● श्री. देवीचंदजी जैन, पुणे - समाजभूषण ७७
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : शील (२)	४३	● आनंदाश्रमिणी हॉस्पिटल, अहमदनगर ८३
● प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर	५९	● भगवान महावीर हॉस्पिटल, दिल्ली ८४
● वैराग्यवाणी	६२	● श्री. बाबूलालजी जैन - सन्मान ८५
● जागृत विचार	६३	● अर्जुन चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे ८५
● हास्य जागृती	६४	

● शासन स्थापना दिवस, पुणे	८६	● आपणच आपले घर लुटायला कसे	
● जयती जैनम् साधना तीर्थ - भिवरी	८६	● आमंत्रण देतो	९४
● सुर्यदत्त स्त्रीशक्ती राष्ट्रीय पुरस्कार	८७	● सुयश बातम्या	९५
● आनंदऋषिजी हॉस्पिटल - अहमदनगर	८८	● विहार सेवा ग्रुप - अधिवेशन	९६
● डॉ. संजयजी जैन, चिंचवड - सन्मान	८८	● गुरु भगवंतों का पाकिस्तान विहार	९६
● जैन सोशल ग्रुप, पुणे आनंद	८९	● सुरक्षा : आज सावधान रहिए -	
● सिध्दी फाऊंडेशन - रक्तदान शिबीर, पुणे	८९	● कल जीवित रहोगे	९७
● अंह का वहम् छोडें	९९	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ● एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००
------------	----------	-------------	----------	---------	---------

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in

● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृति प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay - M. 9822086997/

AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षित आहेत.

चातुर्मास प्रेरणा देता, आओ करलें आत्म-विकास

लेखक : राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेश गुणि शास्त्री

आज का दिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दिन है। जैसा कि आप सभी को ज्ञात है, आज चातुर्मास का मंगल प्रारम्भ होने जा रहा है। आषाढी पूनम से कार्तिक पूनम तक पाद विहारी जैन श्रमण एक ही क्षेत्र में रहते हैं। यह जैन साधु-साध्वियों की उनकी अपनी परम्परा है, उनका अपना कल्प है। आपवादिक कारणों को छोड़कर कोई भी साधु-साध्वी चार माह के लिए निर्धारित स्थान से कहीं भी विहार नहीं करते।

चातुर्मास प्रवास का कारण

कई बार कई लोगों के द्वारा यह प्रश्न प्रायः किया जाता है कि चार- माह तक एक ही क्षेत्र में साधु की अवस्थिति का क्या औचित्य है। संत और सरिता को तो सतत गतिशील रहना चाहिए। इनकी गति से व्यापक लाभ की संभावना रहती है। यह ठीक है कि साधु के सान्निध्य में लोक मंगल पुष्ट होता है और साधु यदि सतत विचरणशील रहता है तो प्रचुर रूप से लोकोपचार सम्पन्न होते हैं, पर साधु का जीवन एकान्त रूप से लोकहित के लिए नहीं है। लोकहित से पहले आत्महित भी तो है। जो आत्महित को सम्यक् प्रकार से सम्पादित कर लेता है, वही परहित कर सकता है।

साधु जब दीक्षित होता है। उस समय पाँच महाव्रतों को स्वीकार करता है- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन पाँच महाव्रतों में प्रथम महाव्रत अहिंसा का है। मनसा, वाचा, कर्मणा जीवन पर्यन्त के लिए समग्र रूप से साधु अहिंसा का परिपालन करने के लिए संकल्पबद्ध होता है। अहिंसा है तो अन्य महाव्रत भी है। अहिंसा के अभाव में अन्य महाव्रतों का पालन कठिन है। अहिंसा मूल है। साधु को षट्काया के प्रतिपालक के रूप में जाना जाता है।

चातुर्मास काल एक ऐसा काल है, जिसमें वर्षा के कारण चारों ओर हरियाली छा जाती है एवं छोटे-बड़े त्रस एवं स्थावर जीवों की प्रचुर रूप से इतनी उत्पत्ति हो जाती है कि संत के द्वारा गमनागमन की प्रक्रिया में बहुत अधिक सावधानी रखने के बावजूद भी जीवों की हिंसा की संभावना रहती है। ऐसी स्थिति में साधु एक स्थान विशेष में ठहर कर आत्म-साधना करता है एवं जिस क्षेत्र में चार माह के लिए वह ठहरता है, वहाँ का जन-मानस उसके सान्निध्य का सहज ही विशेष रूप से लाभ अर्जित कर लेता है एवं करना भी चाहिए।

जैनागमों में इस तथ्य को पुष्ट करने वाले अनेकों उदाहरण मिलते हैं। एक बार वासुदेव श्री कृष्ण ने भगवान नेमिनाथ से बरसात के चार महीने तक द्वारका से बाहर नहीं जाने का नियम ले लिया। ऐसा ही नियम आचार्य हेमचन्द्र की प्रेरणा से गुजरात के सम्राट कुमारपाल ने ग्रहण किया था तथा आत्म-साधना, धर्म-आराधना करके चातुर्मास को सफल बनाया।

चातुर्मास का लाभ उठाएँ

साधु साध्वियों के लिए तो चातुर्मास का महत्त्व है ही, श्रावकों के लिए भी चातुर्मास का कम महत्त्व नहीं है श्रावकों को चाहिए कि वे चार माह का उपयोग अधिकाधिक जागरूकता के साथ करें। यूँ तो हर एक व्यक्ती को क्षण-क्षण जागरूक रहना चाहिए। क्योंकि जीवन क्षणभंगूर है एवं समय का चक्र तेजी से घूम रहा है। कब किसके जीवन का दीप बुझ जाए, कब सांसें का खजाना खूट जाए। निश्चित रूप से इस अनित्य जीवन के लिए कोई कुछ भी तो नहीं कह सकता। सतत अप्रमत्त बनकर चलना, जीवन का ध्येय होना चाहिए। जो धर्म-साधना हम कर लेते हैं, वही तो जीवन में ग

सहायक सिद्ध होती है। जो धर्म-साधना की उपेक्षा करते हैं, उन्हें अंततः पश्चाताप की आग में झुलसना पडता है।

मानव जीवन महत्वपूर्ण जीवन है मानवीय व्यक्तित्व की जो महत्ता है, वह अद्भुत है पुण्यों से प्राप्त जीवन को यूँ ही प्रमाद में नष्ट कर देना, जीवन के साथ न्याय नहीं है। मैं कई बार एक बात कहा करता हूँ-

मानव देह दुर्लभ है, इसे खो नहीं देना ।

मौसम फूल का आया है, कांटे बो नहीं देना ।

मुसकान जो तुमको मिली वो मुस्कुराके बाँट दो-

खुशी का आज मौसम है, रो नहीं देना ॥

हाँ तो, मैं चातुर्मास की बात कर रहा था। सतत जागरूक रहकर धर्म-साधना सम्पन्न करना तो विशिष्ट बात है ही, पर कदाचित प्रमाद के कारण यदि किसी से ऐसा संभव नहीं हो सके तो उन्हें चाहिए कि विशेष तिथियों, पर्व दिवसों एवं चातुर्मास काल में तो अधिकाधिक जागरूकता के साथ स्वयं को प्रस्तुत करते रहें। जिन्हें चार माह तक साधु-साध्वियों का सान्निध्य प्राप्त है, उन्हें यह अवसर खोना नहीं चाहिए। संतों का सान्निध्य सभी को सहज रूप से नहीं मिलता। संतों की महिमा अपार है। संतों के लिए जितना भी कहा जाए, कम है। एक बार मैंने लिखा था-

संत तिमिरांध मन में, ज्ञान का दीपक जलाते हैं।

जो भूल जाते सत्पथ, उन्हें सन्मार्ग पर चलाते हैं।

संत, क्षमा, शांति और साधना की वो त्रिवेणी है बंधु

जिसमें सदैव आत्मचिन्तन के, हिमबिन्दु

झिलमिलाते हैं ।

संतों के सान्निध्य का पूर्ण निष्ठा के साथ चार माह तक लाभ उठाना चाहिए। चार माह का समय काफी लम्बा समय होता है। तत्त्वज्ञान प्राप्त करके जीवन में क्रियाओं के पक्ष को काफी मजबूत बनाया जा सकता है। संतों के सान्निध्य में धार्मिक ज्ञान शिविर एवं सेवा

आदि की दृष्टि से ऐसे कार्यक्रम भी चातुर्मास अवधि में समायोजित किये जा सकते हैं, जिनका संघ-समाज के लिए स्थायी लाभ सिद्ध हो सके जिन क्षेत्रों में संतों के चातुर्मास नहीं है, उन्हें भी चाहिए कि वे प्रतिदिन एक घंटे का समय निकालकर अपने धर्मस्थान में जाकर सामायिक, स्वाध्याय आदि की प्रवृत्ति से स्वयं को जोड़े। पर्व के दिनों में तो थोड़ा-सा भी प्रमाद न करें।

चातुर्मास का महत्व

मैंने चातुर्मास प्रारम्भ के दिवस पर अभी-अभी जो कुछ भी अभिव्यक्त किया है, उससे निश्चित रूप से आप चातुर्मास के महत्व और अपने कर्तव्योंसे परिचित हो चुके हैं, तथापि मैं चातुर्मास के महत्व पर एक प्रसंग आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ, संभवतः यह प्रसंग आपने सुना या पढ़ा होगा।

कहा जाता है कि एक बार बादशाह अकबर ने सभासदों से एक प्रश्न किया- बारह में से चार गये तो कितने शेष रहे? सभासदों ने उत्तर दिया- आठ शेष रहेंगे। सभा में बीरबल भी उपस्थित था, पर वह चुपचाप बैठा हुआ था। बादशाह ने बीरबल की ओर जब प्रश्न भरी दृष्टि से देखा तो बीरबल ने कहा- हजूर! बारह में से यदि चार निकाल दिए गए तो कुछ भी नहीं बचेगा।

इस विचित्र उत्तर को सुनकर सभी विस्मित नयनों से बीरबल की ओर देखने लगे। बीरबल ने रहस्य को स्पष्ट करते हुए कहा- यदि साल के बारह महीनों में से बरसात के चार महीने निकाल दिये जायँ तो आठ महीने किस काम के हैं? जल ही प्राणीमात्र का जीवन है। जलवृष्टि होती है तभी तो सारी स्थितियाँ अनुकूल बनती है, अन्यथा इस धरती पर बच ही क्या जाएगा ?

लौकिक दृष्टि से चार महीनों का जितना महत्व है, आध्यात्मिक दृष्टि से इससे भी अधिक महत्व इन चार महीनों का है। चारों महीनों का योजनाबद्ध ढंग से उपयोग किया जाए। रात्रि भोजन का परिहार, नियमित

रूप से सामायिक, नवकार मन्त्र का जाप, ध्यान-योग, ज्ञान शिविर, धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय, यथा शक्ति तप, सत्कार्य में प्रतिदिन चार माह तक कुछ-न-कुछ दान, दुर्व्यसनों का त्याग, अभावग्रस्त जनों की सेवा आदि कई ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हैं, जिन्हें करना चाहिए।

चातुर्मास विशेष प्रेरणा लेकर उपस्थित हुआ है। चातुर्मास की पावन प्रेरणाओं को हम हृदयंगम करके

यदि जीवन को धर्म, अध्यात्म और परमार्थ की समुचित दिशा दे सके तो सचमुच गरिमामयी बात होगी। अंत में अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ एक प्रेरणास्पद पद्य दे रहा हूँ, इसे आप गुनगुनाएँ एवं जो भाव इसमें छिपे हैं, उन्हें अप्रमत्त बनकर अपनाएँ-

चातुर्मास प्रेरणा देता, आओ करलें आत्म-विकास।

धर्म-साधना से जुड़ जाओ, प्रतिपल प्राप्त

करो उल्लास ॥

●

भारतीय जैन संघटनेच्या वतीने २८ जिल्ह्यांत गाळ काढण्याचे काम



देशातील शंभर जिल्हे व महाराष्ट्रातील २८ जिल्ह्यांत अर्थात, प्रत्येक जिल्ह्यात शंभर तलावाचे खोलीकरण करण्याचे काम शासनाच्या वतीने हाती घेण्यात आले आहे. या सामाजिक कार्याच्या प्रचारासाठी भारतीय जैन संघटनेच्या कार्यकर्त्यांची कार्यशाळा पार पडली.

पुणे येथे वर्धमान प्रतिष्ठान हॉलमध्ये आयोजित केलेल्या भारतीय जैन संघटनेच्या महाराष्ट्र राज्य कार्यकारिणी सभा व प्रशिक्षण कार्यशाळेचे उद्घाटन भारतीय जैन संघटनेचे संस्थापक अध्यक्ष श्री. शांतीलालजी मुथ्था यांच्या हस्ते झाले. यावेळी व्यासपीठावर राष्ट्रीय सचिव राजकुमारजी फतावत, राजाध्यक्ष नंदकिशोरजी साखला, राज्यसचिव दीपकजी चोपडा यांची उपस्थिती होती.

शांतीलालजी मुथ्था म्हणाले, भारतीय जैन संघटना १९८५ पासून सामाजिक कार्य करित आहे. गुजरातचा भूकंप असो किंवा देशात कुठेही नैसर्गिक आपत्ती असो किंवा नुकताच कोरोनाचा प्रादुर्भाव या सर्व संकटांना भारतीय जैन संघटनेच्या प्रत्येक कार्यकर्त्याने नागरिकांना मदत केली आहे. संघटनेने अवर्षण परिस्थितीची तीव्रता लक्षात घेता, अमृत महोत्सवाचे निमित्त साधून देशभरात १०० जिल्हे व महाराष्ट्रातील २८ जिल्हे निवडले. जिल्ह्यातील शंभर तलाव खोलीकरण करण्याचे काम हाती घेण्यात आले आहेत. यासाठी शासनाला सोबत घेऊन संघटनेच्या कार्यकर्त्यांनी कामाला लागावे, असे आवाहन त्यांनी केले. प्रास्ताविक राजाध्यक्ष नंदूजी साकला यांनी केले. यावेळी सर्व भारतातून पदाधिकारी व कार्यकर्ते उपस्थित होते.

●

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत
पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर,
सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...
जैन समाजात जाहिरातीचे
उत्तम व प्रभावी माध्यम
जैन जागृति

जैन धर्माची पुरातनता आणि आजचे वास्तव!

लेखक : जेष्ठ इतिहासकार श्री. संजय सोनवणी, पुणे. मो. : ७७२१८७०७६४

जैन धर्माचे संस्थापक महावीर (इ. स. पूर्व ५९९ ते इ.स. पूर्व ५२७) आहेत असा सर्वसाधारण समज आहे. प्रत्यक्षात जैन धर्म अतिप्राचीन असून आद्य तीर्थंकर ऋषभनाथ हे इ.स. पूर्व २७०० मध्ये होऊन गेल्याचे आता ऐतिहासिक पुरावे उपलब्ध आहेत. या धर्माचा उदय सर्व जीवांना समान मानणाऱ्या समण संस्कृतीच्या उदयकाळीच झाला. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन यांनी याबाबत सविस्तर विवेचन आपल्या 'इंडियन फिलोसोफी' या ग्रंथात केले आहे व ते उद्बोधक असे आहे. ते म्हणतात कि, भागवत पुराणानेही ऋषभनाथ हे जैन धर्माचे संस्थापक आहेत हे मान्य केले आहे. इसवी सनापूर्वीच ऋषभनाथांची आराधना केली जात होती असे पुरावे मिळाले आहेत. यजुर्वेदामध्ये ऋषभ, अजितनाथ आणि अरिष्टनेमी ही तीन तीर्थकरांची नावे नमूद आहेत. महावीर हे जैन धर्माचे संस्थापक नसून ते त्यांच्यापूर्वी (इसपू ७७६) झालेल्या पार्श्वनाथांच्या परंपरेतील थोर सुधारक होते. ऋषभनाथांचे ऐतिहासिकत्व बघता जैन धर्म हा पार्श्वनाथापूर्वीही अस्तित्वात होता यात संशय राहत नाही.

डॉ. हर्मन ज्याकोबी म्हणतात की, जैन धर्म अगदी प्रारंभिक काळापर्यंत मागे जातो. त्यातील आदिम धार्मिक आणि आधिभौतिक सिद्धांत हे भारतीय तत्वज्ञानाच्या अगदी सुरुवातीच्या काळातील असल्याचे दिसतात. आस्त्रव आणि संवर हे शब्द हे जैनांनीच अत्यंत वेगळ्या परिप्रेक्षात मूळ अर्थाशी प्रामाणिक राहत वापरले आहेत. या आणि अशा शब्दांच्या वापरावरून जैन धर्म हा वेदपूर्व आणि खूप जुना आहे असे म्हणता येते. जैन धर्माचे संन्यासी

बंधमुक्त, कर्मग्रंथीमुक्त जीवन जगतात म्हणून त्या धर्माचे नाव आधी निर्ग्रंथ असे होते. स्वतःवर विजय मिळवतात तेच जिन आणि जिनांचा समुदाय म्हणून पुढे जैन असे धर्माचे नाव स्थापित झाले. धर्मानंद कोसंबी म्हणतात कि निर्ग्रंथ म्हणजे बंधमुक्त. ही निर्ग्रंथांची परंपरा निश्चितपणे बुध्द पूर्व आहे. त्रिपिटकाच्या पालि भाषेत अनेक ठिकाणी जैनांना निगंठ म्हटले असून वप्प, उपाली, सच्चक अशा निगंठांच्या श्रावकांचा उल्लेख आढळतो. यापैकी वप्प हा गौतम बुध्दांचा काका होता असे अठ्ठकथा सूत्रात म्हटलेले आहे. हर्मन ज्याकोबी म्हणतात कि निर्ग्रंथ म्हणजे सर्व प्रकारच्या विकारांपासून आणि भौतिक साधनांपासून ज्याने आपले सर्व बंध तोडले आहेत (माया-मोह पाश) त्याला निर्ग्रंथ असे म्हणत व जैन धर्माचेच ते पुरातन नाव होते.

तीर्थंकर हा शब्द प्रेषित किंवा धर्म संस्थापक या अर्थाने वापरला जात नाही. तीर्थ म्हणजे भक्तीभावाने दर्शन घ्यायला जावे असे पवित्र स्थान असाही अर्थ येथे अभिप्रेत नाही. द्रष्टे, केवलज्ञानी आणि मानवाला अधिक उन्नत दिशा दाखवणाऱ्या व्यक्तीलाच तीर्थंकर असे संबोधले जाते. 'तीर्थंकर' म्हणजे तीर्थ उत्पन्न करणारा. तीर्थ या शब्दाचे पुढे दिल्याप्रमाणे अनेक अर्थ जैन ग्रंथात आढळतात : (१) धर्म, (२) संसार सागराच्या पैलतीरा वरील मोक्ष मंदिराकडे नेणारा पाण्याचा उतार (घाट) व बंदर, (३) जैन साधू, साध्वी, श्रावक, श्राविका यांचा संघ, (४) जैनांचे १२ अंगग्रंथ इत्यादी. या अर्थावरून तीर्थंकर म्हणजे धर्माध्यक्ष, जैन संघ प्रमुख, मोक्षमार्ग दाखविणारा असे या संज्ञेचे अर्थ होतात. पण हे झाले लौकिकार्थ.

यामागे दडलेले सांकेतिक अर्थ मात्र वेगळे आहेत. तीर्थकरालाच 'जिन' म्हणजे इंद्रिये जिंकणारा, अर्हत्, अरिहंत, सर्वज्ञ, वीतराग, केवली म्हणजे केवलज्ञानी अशी नावे दिलेली आहेत. जिन शब्दावरूनच या धर्माच्या अनुयायांना जैन असे नाव पडले. केवलज्ञानाच्या प्राप्तीनंतर तीर्थकर धर्मोपदेश करीत विहार करतात. तीर्थकर हे केवली (केवलज्ञान प्राप्त झालेले) असतातच परंतु सर्व केवली तीर्थकर होत नाहीत.

इतिहास काळापासून पाहिले तर आद्य तीर्थकरां पासून झालेल्या प्रत्येक तीर्थकराने जैन तत्त्वज्ञानात भर घातलेली आहे. पार्श्वनाथ यांनी चातुर्याम धर्म सांगितला. महावीरांचे मातापिता याच संप्रदायाचे अनुयायी होते. महावीरांनीही याच संप्रदायाची दीक्षा घेतली. महावीरांच्या सुधारित संप्रदायाला 'जिनकल्प' आणि पार्श्वनाथांच्या प्राचीन संप्रदायाला 'स्थविरकल्प' म्हणतात. पार्श्वनाथांनी 'चातुर्यामसंवर' म्हणजे अहिंसा, सत्य, अचौर्य व अपरिग्रह ही चार व्रते प्रतिपादन करणारा 'चातुर्याम धर्म' शिकविला. महावीरांनी त्यांत ब्रह्मचर्यव्रताची भर घालून आपली पाच महाव्रते किंवा 'पंचयामिक धर्म' सांगितला. यांशिवाय प्रतिक्रमण म्हणजे स्वपापांची कबुली व प्रायश्चित्त घेणे, नग्रव्रत, संन्यास व तप या गोष्टींवर महावीरांनी विशेष भर दिला. पार्श्वनाथांचा व महावीरांचा असे दोन्ही संप्रदाय काही काळ निराळे होते; परंतु महावीरांनी त्यांना नंतर एकत्र केले. जैन धर्माला प्रभावी धर्म बनवण्यात महावीरांनी मोठा वाटा उचलला असल्याने जगातील प्रमुख धर्म संस्थापकांत त्यांचे नाव आदराने घेतले जाते.

जैन अथवा बौद्ध धर्म हे वैदिक धर्म व कर्मकांडा विरुद्ध प्रतिक्रियांच्या स्वरूपात जन्माला आले असा सर्वसाधारण समज आहे; पण त्यात वास्तव नाही. मुळात वैदिक धर्म भारतात इ.सन पूर्व १२०० नंतर

आला. भारतीय ऐहिक, वैचारिक व तत्त्वज्ञान संस्कृती वैदिकांच्या फार पूर्वी वैभवाच्या शिखरावर पोचलेली होती. या श्रमण संस्कृतीच्या विचारधारांनी वेगवेगळ्या तत्त्वज्ञानाच्या, संप्रदायांच्या आणि जीवनहेतूंच्या माध्यमातून आलेल्या लोकधर्माचे लोकांचे वैचारिक व आध्यात्मिक प्रबोधन करण्याचे विस्तृत कार्य केलेले होते. असे असूनही वेद हेच श्रमण परंपरेचे स्रोत होत, असा काही वैदिक विद्वानांचा आग्रह असतो. उदा. आपल्या वैदिक संस्कृतीचा इतिहास या ग्रंथात तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी पृष्ठ क्र. ३५३ वर एकीकडे म्हणतात कि, बौद्ध व जैन धर्म म्हणजे वैदिक परंपरेच्या विरुद्ध बंड करून निघालेली हिंदूंचीच पाखंडे होत. एकीकडे बौद्ध आणि जैनांना पाखंड म्हणणारे तर्कतीर्थ जोशी दुसरीकडे लगेच म्हणतात कि बौद्ध व जैन धर्माचा वैदिक धर्माशी असलेला ऐतिहासिक संबंध अगदी निकटचा आहे. (पृ. ३५८).

पण प्रसिद्ध अभ्यासक जोहान्स ब्रॉंकहोस्ट म्हणतात कि, जैन व बौद्ध धर्म हे वैदिक धर्माच्याच शाखा आहेत अशी मान्यता असली तरी ती खरी नाही. हे दोन्ही धर्म वैदिक धर्माच्या प्रभावक्षेत्रापासून दूर असलेल्या भागात जन्माला आले. वैदिक तत्त्वज्ञानाचा आधार आणि जैन-बौद्धांच्या तत्त्वज्ञानाचा आधार परस्परविरोधी आहे. (Brahmanism: Its place in ancient Indian society by Johannes Bronkhorst, p. 362,) जैन आणि बौद्ध धर्म उदयाला आले ते मगधात. मगध तर वैदिकांना दीर्घ काळ त्याज्य असलेला प्रदेश होता. वैदिक धर्मियांचे वास्तव्य इस पूर्व तिसऱ्या शतकापर्यंत आर्यावर्त म्हणजे कुरु-पांचाल या प्रदेशातच होते. मगधात त्यांचा प्रवेशच झाला नसल्याने त्या वैदिक धर्माविरुद्ध हे नवे दोन धर्म जन्माला येण्याची आवश्यकताच नव्हती. मुळात जैन आणि बौद्ध धर्माला श्रमण संस्कृतीची अतिदीर्घ आणि स्वतंत्र

परंपरा आहे. जैन आणि बौद्ध यांच्या प्रमाणेच भारतात श्रमण संस्कृतीतील अनेक धर्मपंथ अस्तित्वात होते. त्यापैकी तत्कालीन इतर पाच प्रमुख आचार्यांचा उल्लेख बौद्ध त्रिपिटकात सुद्धा आहे. किंबहुना संन्यास, योग, अहिंसा, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य इत्यादि बाबी तर श्रमण संस्कृतीचे स्वतंत्र उद्गार आहेत. महावीर याच परंपरेतील श्रेष्ठ समाजसुधारक होते व त्यांनी आपल्या तत्वज्ञानातून आणि संघटनेतून धर्मसुधारक म्हणून स्थान मिळवले.

ईश्वराशिवाय धर्म असू शकतो, ही गोष्ट सामान्य माणसाला विचित्र वाटते. कारण धर्म म्हणजे 'ईश्वर प्रार्थना', हे समीकरण त्याच्या मनात बालपणापासून ठसलेले असते. मराठीत आपण देवधर्म हा समास करून देव व धर्म यांचा संबंध प्रगट करतो परंतु ईश्वर सृष्टिकर्ता आहे, तोच जीवांना त्यांच्या कर्मानुसार चांगली-वाईट फळे देतो, ही कल्पना जैन धर्माला मान्य नाही. सृष्टी ही कोणी केलेली नाही व कोणी तिचा नाशही करित नाही. प्रत्येक जीवाला त्याच्या कर्मानुसार आपोआप फळ मिळत असते, अशी विचारसरणी जैन धर्माची आहे. जैन धर्म सृष्टिकर्ता ईश्वर मानीत नसला, तरी पापपुण्य, स्वर्गनरक व बंधमोक्ष मानतो आणि मोक्षप्राप्तीसाठी इंद्रियनिग्रह व्रताचरण, ध्यानधारणा इ. गोष्टी आचारावयास आग्रहाने सांगतो.

असे जरी असले, तरी 'देव' किंवा 'ईश्वर' नावाची वस्तू जैन धर्मात नाही असे नाही. कर्माचा नाश करून केवलज्ञान प्राप्ती व मोक्षप्राप्ती करून घेतलेला प्रत्येक 'जीव परमात्मा'च आहे व तो आदर्श व पूज्य असल्याने त्यालाच जैन ईश्वर म्हणतात. त्याच्या गुणांची प्राप्ती होण्यासाठी, त्याला आदर्श म्हणून पुढे ठेऊन, त्याची पूजा अर्चा आणि भक्ती करणेही जैन धर्माला मान्य आहे. भारतवर्षामध्ये सगळीकडे तीर्थकरांची भव्य मंदिरे प्राचीन काळापासून अस्तित्वात असून मोठ्या वैभवाने त्यांच्या मूर्तीची तेथे

पूजा केली जाते. परंतु प्रत्येक जीवास/मनुष्यास ईश्वर बनण्याचा अधिकार मान्य असलेला हा जगातील एकमेव धर्म आहे असे म्हणायला प्रत्यवाय नाही.

प्रत्येक धर्मात वैचारिक मतभेदांमुळे फूट पडल्याचे आपल्याला दिसते. जैनांचेही तेच झाले. जैनांची पहिली धर्मपरिषद पाटलीपुत्र येथे भगवान महावीरांच्या निर्वाणानंतर १६० वर्षांनी भरली होती. या परिषदेत भगवान महावीरांची वाणी संग्रहित केली गेली. त्यानंतर सम्राट चंद्रगुप्ताच्या काळात सलग २१ वर्षांचा भयानक दुष्काळ पडला. या वेळीस आचार्य भद्रबाहू हजारो जैन मुनींसह दक्षिणेत गेले. येथूनच श्वेतांबर आणि दिगांबर हे भेद निर्माण झाले असे मानले जाते. या पंथात अनेक मान्यताभेद आहेत, ते असे,

(१) नग्नत्व (अचेलकत्व) हे मुक्तीचे आवश्यक अंग आहे, वस्त्रधारी साधूला केव्हाही मुक्ती मिळणार नाही, असे दिगांबर पंथाचे मत. उलट श्वेतांबर पंथाचे मत असे, की नग्नत्व श्रेष्ठ साधूचे लक्षण असले, तरी वस्त्र धारण केल्याने मुक्तीच्या मार्गात अडथळा येत नाही.

(२) स्त्रीजन्मात मुक्ती नाही, असे दिगांबरांचे मत. स्त्रियांच्या अंतःकरणांत चिंता आणि माया (कपट) असते म्हणून त्यांना मुक्ती नाही. स्त्रियांना तप करता येईल, सद्गती मिळविता येईल पण मुक्ती मिळविता येणार नाही. त्यासाठी त्यांना पुरुषजन्म मिळवावा लागेल. उलट श्वेतांबरांचे मत असे, की स्त्रियांनाही तप करून कर्मनाश करता येतो आणि मुक्ती मिळविता येते. चोवीस तीर्थकरांपैकी एकोणिसावे तीर्थकर 'मल्ली' या महिला होत्या, असे श्वेतांबर मानतात.

(३) केवलीला (केवलज्ञानी साधूला) आहाराची जरूरी नाही, असे दिगांबर मानतात पण श्वेतांबर म्हणतात, की केवली आहार घेतात.

(४) पाणी पिताना व आहार घेताना पात्राचा

उपयोग न करता हातातूनच अन्नपाणी सेवन करणे, हे दिगंबर साधूंचे वैशिष्ट्य आहे. श्वेतांबर साधू भिक्षा घेण्यासाठी व अन्न सेवन करण्यासाठी पात्राचा उपयोग करतात. दिगंबर साधू मिळेल तिथेच उभे राहून आहार घेतात, तर श्वेतांबर साधू भिक्षान्न आपल्या वसतिस्थानात आणून अन्न सेवन करतात.

(५) अकरा अंगग्रंथ व दसवेयालय, उत्तरज्झयण इ. अंगबाह्य ग्रंथांना श्वेतांबर जैनागम समजतात पण ते दिगंबरांना आगम म्हणून प्रमाण नाहीत. मूळ अंगग्रंथांचा लोप झालेला आहे, असे ते समजतात.

(६) उमास्वातीचे तत्त्वार्थाधिगमसूत्र दोन्ही संप्रदायांना मान्य आहे परंतु काही पाठभेद आहेत. तत्त्वार्थाधिगमसूत्रावर उमास्वातीचे जे भाष्य आहे, ते श्वेतांबरांना मान्य आहे परंतु दिगंबरांना ते मान्य नाही.

तत्त्वार्थाधिगमसूत्रामध्ये जे अनेक सांप्रदायिक पाठभेद आहेत, त्यांपैकी काही खालील विषयांसंबंधी आहेत :

(अ) दिगंबर सोळा स्वर्ग मानतात तर श्वेतांबर बाराच स्वर्ग मानतात.

(आ) दिगंबर पृथ्वी, अप, तेज, वायू व वनस्पती या पाच जीवांना स्थावर जीव मानतात तर श्वेतांबर पृथ्वी, अप व वनस्पती हे तीनच स्थावर मानतात.

(इ) दिगंबर काल हे स्वतंत्र द्रव्य मानतात तर श्वेतांबरांपैकी फक्त काहीच आचार्य कालाला स्वतंत्र द्रव्य मानतात.

(ई) पाच अणुव्रतांच्या नावांमध्ये व क्रमामध्ये दोन्ही संप्रदायांत मतभेद नाही परंतु तीन गुणव्रते व चार शिक्षाव्रते यांच्या नावांमध्ये व क्रमामध्ये त्यांच्यात मतभेद आहेत.

पण या दोन पंथांच्या अनुयायांना आपापल्या पंथांचीही मते बदलावी वाटली आणि त्यातून पुढे अजून उपपंथ पडत गेले. दिगंबर पंथात वीसपंथी, तेरापंथी असे काही तर श्वेतांबरांत मंदिरमार्गी,

स्थानकवासी असे काही उपपंथ निर्माण झाले आणि जैन तत्त्वज्ञानही कोठे विस्तारित तर कोठे संकुचित झाले. असे असले तरी उत्तर, मध्य व दक्षिण भारतात हा धर्म फार मोठ्या प्रमाणावर विस्तारला. अनेक राजांनी त्या धर्माला तर स्वीकारलेच पण राजाश्रयही दिला. महाराष्ट्रात हा धर्म केवढा प्रबळ होता याचे पुरावे इ.स. पूर्वच्या तिसऱ्या शतकातील लोहगड व पाले येथील शिलालेख, देवगिरी किल्ल्यावरील जैन गुंफा, जिंतूर (जिनपूर), कोल्हापूर-सांगली इत्यादी भागातील शिलालेख व जैन गुंफा यावरून दिसते. राष्ट्रकूट काळात तर या धर्माने मराठी जीवनही व्यापले होते.

आठव्या शतकापर्यंत हा धर्म आपले सर्वस्वी स्वतंत्र अस्तित्व राखण्यात यशस्वी झाला. वैदिक धर्मातील कल्पनांना जैनांनी थाराही दिला नाही. पण दक्षिणेत आचार्य जिनसेनांच्या काळात दक्षिणेत ब्राह्मणी (वैदिक) धर्म आणि जैन धर्मात भीषण संघर्ष सुरु होता. महावीरांच्या उदारतम संस्कृतीला अनुसरून त्यांनी बऱ्याचशा ब्राह्मणी कर्मकांडांचे जैनीकरण केले. आपल्या आदिपुराण ग्रंथात ते पुढे म्हणतात कि कोणीही साहित्यकार आपल्या काळातील सामाजिक प्रभावांपासून अलिप्त राहू शकत नाही. ही कृतीही त्याला अपवाद नाही. मनुस्मृतीत ज्याप्रमाणे गर्भादानापासून अंतिम संस्कारापर्यंत जी जी कर्मकांडे येतात त्यांचेच जैन संस्करण या पुराणात आलेले आहे. पण अर्थात यात बदलही असून अहिंसादी जैन व्रतांचा स्वीकार ज्याही व्यक्तीने केला त्यालाच ब्राह्मण मानले गेले. अशा व्रतसंस्कार झालेल्या व्यक्तीने यज्ञोपवीत धारण करणे अनिवार्य केले.

आदिनाथांनी समाज व राज्यव्यवस्था स्थापन केली व तीनच वर्ण निर्माण केले. पण भरत चक्रवर्तीने ब्राह्मण वर्णाची स्थापना केली. यात व्रतसंस्काराने कोणीही ब्राह्मण बनू शकतो असे म्हटले. जैन ब्राह्मणाने

असी, मसि, कृषी, आणि वाणिज्याच्या सहाय्याने उपजीविका करावी. (पृ. ८, पृ. १० Mahapuran (di Purana) Bhagavat Jinasenacarya By Pandit Panna Lal Jain) भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, १९४४) क्षेत्रीय, वैश्य आणि शूद्र वर्णाची स्थापना ऋषभदेवांनी केली तर ब्राह्मण या वर्णाची स्थापना चक्रवर्ती भरताने केली असेही या ग्रंथात नमूद करण्यात आले आहे. अर्थात या वर्णांचा अर्थ आणि त्यांच्या नियत कर्मांना त्यांनी व्रत बंधनात बांधले हे वेगळेपण महत्वाचे आहे. (आदिपुराण पर्व ३८) असे असले तरी वैदिक व्यवस्थेचे हे बदल करून का होईना केले गेलेले अनुसरण आहे व त्यांचा प्राचीन ग्रंथांतील मतांशी मेळ बसत नाही हे स्पष्ट आहे.

एकंदरीत प्राप्त स्थितीत तडजोड करण्याच्या अथवा आपला धर्म वरिष्ठ असून वैदिक धर्म दुय्यम आहे हे दर्शवण्यासाठी प्रतिक्रिया स्वरूप ही वर्णने आलेली दिसतात. याचे महत्वाचे कारण म्हणजे समग्र जैन साहित्यात वर्णांचा व स्पृश्य-अस्पृश्यतेचा स्पष्ट उल्लेख प्रथम फक्त जिनसेनकृत आदिपुराणातच मिळतो. पण या पुराणाचा आजच्या जैनांवर अद्भुत प्रभाव असून त्यामुळेच श्रेष्ठ-कनिष्ठता व ब्राह्मणी संस्कारांचे जैन धर्मात मुळात नसलेले स्थान त्यांच्यात आज रुजलेले दिसते.

जैन धर्मतत्त्वे पूर्णतया स्वतंत्र असतानाही आज जैनांचे वेगाने वैदिकीकरण होत आहे की काय याची शंका यावी असे वातावरण आहे. महावीरांनी व पार्श्वनाथ यांच्या परंपरेतील एके काळी सहिष्णू आणि उदार असणारा हा धर्म संकुचित वृत्तीचा व असहिष्णू बनत चालला आहे हे अनेक घटनांवरून दिसते. प्राचीन काळापासून जातीय जाणिवांचा त्याग केलेला हा धर्म आज कोठेतरी जातीय ही झाला आहे आणि यामुळे या धर्माचा विस्तार पूर्वी जेवढ्या मोठ्या प्रमाणात होता तो आज दिसत नाही. पूर्वी जैन धर्मात

ज्ञानी साधूंची एक प्रदीर्घ आणि समृद्ध परंपरा होती. त्यांनी मराठीसह देशांतील अनेक जनभाषांना समृद्ध केले. त्या त्या भाषांना साहित्य-व्याकरणही दिले. आज ती परंपरा क्षीण झालेली आहे. त्यामुळे आपल्या प्राचीन साहित्यात काय म्हटलेले आहे हे खुद्द जैनांनाच माहीत ही नाही. परिणामी जैनांकडे पाहण्याची जैनेतरांची दृष्टी एक संकुचित प्रवृत्तीचा अनुदार धर्म अशी होत गेलेली आहे आणि हे जनमतातील प्रतिबिंब या अतिप्राचीन धर्माला शोभणारी बाब आहे असे म्हणता येणार नाही. वैदिकीकारणाचा मोह व अंधानुकरण हेच या वाढत्या अनुदार प्रवृत्तीमागे आहे हे आजच्या जैन बांधवांना लक्षात घ्यावे लागेल. सर्व जीवांना ईश्वर होता येण्याची क्षमता आहे यावर श्रद्धा, असे महनीय तत्त्वज्ञान असलेला हा धर्म संकुचित प्रवृत्तीचा बनणार असेल तर तो विश्वधर्म कसा होईल यावर चिंतन करण्याची आवश्यकता आहे!

जीवदया व गौपालन के लिए



श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान

उज्ज्वल गौपालन संस्था

नवकार तीर्थ, लोणीकंद की यह गोशाला आप सभी दानवीर के सहयोग से गोवंश का अभय दान बन गयी हैं। आपके परिवार की हर खुशी में एंव विभिन्न प्रसंग पर रु. १००१/- देकर एक गोवंश को अभय दान दे। या रु. ५१००१/- देकर २१ साल की गोशाला की मिति लेकर जीवदया के इस महायज्ञ में सहयोग देकर मनःशांती पाईए।

नवकार तीर्थ, पुणे - नगर रोड, लोणीकंद, जि. पुणे.

फोन : २७०६९६९०, ९८२२९५७७८८

पुणे ऑफिस : दुग्गल प्लाझा, प्रेमनगर, बिबवेवाडी रोड, पुणे ३७. फोन : ६५२५७७०५, मो.: ९८५०७१४१६४
www.jainnavkartisth.goshala.org

संस्था को दिए गए दान पर आयकर कानून कलम ८० जी के अंतर्गत इन्कमटॅक्स की छूट मिलेगी

कच्छर तपशील - जून २०२३



- ❖ **आचार्य शिवमुनिजी व आचार्य महाश्रमण - मंगल मिलन**
श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट प.पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. व तेरापंथी धर्म संघचे आचार्य श्री महाश्रमणजी यांचे मंगल मिलन ६ मे २०२३ रोजी बलेश्वर, सुरत, गुजरात येथे झाले. (बातमी पान नं. ७४)
- ❖ **जितो पुणे - जितो नगर**
जितो पुणे चॅप्टर तर्फे पुणे शहरात भव्य जितो नगर उभारले जात आहे. जितो नगर, गंगाधाम-कात्रज रोडपासून ५०० मीटर अंतरावर आहे. ४४० चौरस फूट १ बेडरूम हॉल किचन (1 BHK) चे एकूण ४७७ युनिट्स अनुदानित किमतीत आहेत, प्रत्येकी १२ मजल्यांच्या तीन टॉवरमध्ये आहेत.
१८ एप्रिल २०२३ रोजी स्वप्नपूर्ती कार्यक्रमांमध्ये डॉ. द्वारे ४७७ युनिटसपैकी २७९ युनिटसचे वाटप केले ज्याला संपूर्ण भारतातील JITO दिग्गजांची, देणगीदारांची आणि जैन समाजातील मान्यवर उपस्थित होते.
(बातमी पान नं. ७६)
- ❖ **भारतीय जैन संघटना**
देशातील शंभर जिल्हे व महाराष्ट्रातील २८ जिल्ह्यांत अर्थात, प्रत्येक जिल्ह्यात शंभर

तलावाचे खोलीकरण करण्याचे काम शासनाच्या वतीने हाती घेण्यात आले आहे. या सामाजिक कार्याच्या प्रचारासाठी भारतीय जैन संघटनेच्या कार्यकर्त्यांची कार्यशाळा पुण्यात पार पडली.

पुणे येथे वर्धमान प्रतिष्ठान हॉलमध्ये आयोजित केलेल्या भारतीय जैन संघटनेच्या महाराष्ट्र राज्य कार्यकारिणी सभा व प्रशिक्षण कार्यशाळेचे उद्घाटन भारतीय जैन संघटनेचे संस्थापक अध्यक्ष श्री. शांतिलालजी मुथ्था यांच्या हस्ते झाले. यावेळी व्यासपीठावर राष्ट्रीय सचिव राजकुमारजी फतावत, राजाध्यक्ष नंदकिशोरजी साखला, राज्यसचिव दीपकजी चोपडा, श्री. विलासजी राठोड यांची उपस्थिती होती (बातमी पान नं. १७)

- ❖ **श्री. देवीचंदजी जैन, पुणे - समाजभूषण**
पूना हॉस्पिटलचे अध्यक्ष देविचंदजी जैन यांना मेडीजैन या संस्थेच्या वतीने समाज भूषण पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. हा पुरस्कार पद्मविभूषण डॉ. के. एच. संचेती, तुषार भाई दोशी, पूना हॉस्पिटलचे ट्रस्टी डाह्याभाई शहा, राजेशजी शहा, पुरुषोत्तमजी लोहिया, नैनेशजी नंदू, इंदरजी जैन, मेडीजैन संघटनेचे चेअरमन डॉक्टर हसमुखजी गुजर यांच्या उपस्थित प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ७७)
- ❖ **अर्जुन चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे**
पुणे: अर्जुन चॅरिटेबल ट्रस्ट व सॉलिटियर ग्रुप तर्फे महाबळेश्वर मधील जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळेत गावातील नागरिकांसाठी आरोग्य तपासणीचे विनामूल्य शिबिर घेण्यात आले. ५०० पेक्षा जास्त गावकऱ्यांनी याचा लाभ घेतला. ट्रस्टचे संस्थापक अध्यक्ष श्री. अशोकजी धनराजजी चोरडिया यांचे गावकऱ्यांनी आभार मानले. (बातमी पान नं. ७७)

- ❖ **भगवान महावीर हॉस्पिटल – दिल्ली**
भगवान महावीर सुपर स्पेशियलीटी हॉस्पिटल दिल्लीचे भूमीपूजन २३ एप्रिल २०२३ रोजी गुरुदेव श्री प्रकाशचंदजी म.सा., श्री जयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या पावन सान्निध्यात केंद्रिय जलशक्ति मंत्री श्री. गर्जेन्द्र सिंह शेखावत यांच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ८४)
- ❖ **आनंदऋषिजी हॉस्पिटल, अहमदनगर**
जैन सोशल फेडरेशन संचलित आनंदऋषिजी हॉस्पिटलमध्ये स्व. जतनबाई माणकचंदजी बोथरा यांच्या स्मरणार्थ पारस ग्रुपच्या वतीने मोफत मूत्रविकार तपासणी आणि उपचार शिबिराचे आयोजन केले. यावेळी पेमराजजी बोथरा, संतोषजी बोथरा, प्रतिभाजी बोथरा, समिक्षाजी बोथरा, गौरवजी बोथरा, डॉ. मयुरजी मुथा, मूत्रविकार तज्ञ डॉ. संकेतजी काळपांडे, बाबूशेठजी लोढा, डॉ. आशिषजी भंडारी आदी उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ८८)
- ❖ **सिध्दी फाऊंडेशन, पुणे**
पुणे येथील सिध्दी फाऊंडेशन तर्फे २१ मे २०२३ रोजी रक्तदान शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी ३०० जणांनी रक्तदान केले. स्व. मदनलालजी कचरदासजी छाजेड यांच्या स्मृतिप्रीत्यर्थ १५ वर्षांपासून या शिबिराचे आयोजन केले जाते. सिध्दी फाऊंडेशनचे संस्थापक मनोजजी छाजेड, अध्यक्ष ललितजी जैन आणि मुकेशजी छाजेड हे या शिबिराचे आयोजन करतात. (बातमी पान नं. ८९)
- ❖ **साहित्य भूषण – सुरेखा शहा**
सोलापूर येथील जैन समाज गौरव, साहित्य भूषण सुरेखा शहा यांचा परिचय देणारा लेख पान नं. ३१ वर प्रकाशित केला आहे.

- ❖ **श्री. बाबूलालजी जैन, मुंबई – सन्मान**
समग्र जैन चातुर्मास सूचीचे प्रधान संपादक श्री. बाबूलालजी जैन-उज्ज्वल यांचा गत ४४ वर्ष जैन समाजाची आपल्या प्रकाशनाद्वारे केलेले सेवे बद्दल भोपाळ येथे “साधू सेवक” ही उपाधी देऊन गौरव करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८८)
- ❖ **सूर्यदत्त स्त्री शक्ती राष्ट्रीय पुरस्कार**
सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट्स आणि सूर्यदत्त वुमेन एम्पॉवरमेंट अँड लीडरशिप अॅकडमी पुणे यांच्या संयुक्त विद्यमाने ‘सूर्यदत्त स्त्री शक्ती राष्ट्रीय पुरस्कार – २०२३’ वितरण सोहळा मुंबई येथे राजभवनात संपन्न झाले. यावेळी महाराष्ट्राचे राज्यपाल श्री. रमेशजी बैस, पद्मश्री परमपूज्य आचार्य श्री चंदनाजी महाराज, भारतीय जनता पार्टीचे माजी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शामजी जाजू, सूर्यदत्त ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट्सचे संस्थापक प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया, उपाध्यक्षा व सचिव सुषमाजी चोरडिया आदि मान्यवर उपस्थित होते. यावेळी समाजात विशेष कार्य केलेल्या महिलांना सूर्यदत्त स्त्री शक्ती राष्ट्रीय पुरस्काराने गौरविण्यात आले. (बातमी पान नं. ८७)

सुसंस्कार व सदाचारासाठी 'जैन जागृति' नियमित वाचा

आपले नातेवाईक, स्नेहीजण, व्यापारी बंधू
यांना 'जैन जागृति' मासिक भेट पाठवा.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	रु. २२००	कोणत्याही महिन्यापासून वर्गणीदार होता येते. 'जैन जागृति' नावाने वर्गणी पाठवा.
त्रिवार्षिक	रु. १३५०	
वार्षिक	रु. ५००	